हरियाणा के पुरुषों के लोक–नृत्यों का सौंदर्य पक्ष

डॉ. कुलविंदर कौर
सहायक प्रोफेसर, नृत्य राजकीय कन्या महाविद्यालय, पटियाला

Abstract

Folk music holds special significance in Haryana. People here use folk music in some form or another, whether it's singing, dancing, or playing instruments, at almost every celebration, festival, or other occasion. Folk dances hold special significance among men in Haryana. There are several dances performed exclusively by men, showcasing their unique beauty.
Keywords: Haryana, Folk Music, Folk Dance,

भूमिका

सौंदर्य शब्द संस्कृत के 'सुंदर' शब्द से बना है। कुछ विद्वान 'सुंदर' शब्द की उत्पत्ति के बारे में 'वाचस्पति' कोश ग्रंथ में लिखते हैं कि 'सुंदर' शब्द 'सु' उपसर्ग और 'उन्द' धातु के साथ 'अरण' प्रत्यय जोड़कर बना है। 'सु' का अर्थ है श्रेष्ठ या अच्छी तरह और 'अरण' भाववाचक प्रत्यय, अर्थात 'सुंदर'[5]। इस प्रकार इस शब्द की उत्पत्ति के अनुसार अर्थ हुआ– अच्छी तरह से सरस करने वाला। इसकी निष्पत्ति इस प्रकार हुईरू 'सु' अर्थात् जो अच्छी तरह से और 'नंदयति' अर्थात् जो प्रसन्न करता है। यानी जो अच्छी तरह प्रसन्न करता है, वही सुंदर है।

हरियाणा के लोक–नृत्यों को सौंदर्य के स्तर पर देखें तो पता चलता है कि इन लोक–नृत्यों में सौंदर्य प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप में इस प्रकार विद्यमान है कि कलाकार और दर्शक के मनों की स्थिति में कोई अंतर नहीं रह जाता। हरियाणा के लोक–नृत्य बहुत सरल और सहज हैं। इनमें इनका पहनावा, इनकी भाषा, संगीत वाद्य और इनके द्वारा प्रयुक्त सामग्री ही इन लोक–नृत्यों का सौंदर्य है। हरियाणा के लोक–नृत्यों का सौंदर्य पक्ष इस प्रकार हैरू

धमाल

धमाल नृत्य का सौंदर्य पक्ष यह है कि यह नृत्य खुशी और उल्लास का नृत्य है। निश्चिंतता इस नृत्य का आधार है। जब फसल पक जाती है तो किसान उसे देखकर निश्चिंत महसूस करता है क्योंकि अब उसे अपनी मेहनत का फल मिलने वाला है। तब वह

[5] डा. सत्या मलहोत्रा, नई कविता में सौंदर्य चेतना, पृष्ठ–8..

अपनी मेहनत की थकान को भूलकर खुशी से झूम उठता है और चांदनी रातों में एक जगह इकट्ठा होकर किसान अपनी आंतरिक खुशी का प्रदर्शन करते हैं, जो कि धमाल का रूप धारण करता है। इसमें जब डफ पर थाप पड़ती है तो खुशी में मन के साथ पैर भी थिरक उठते हैं और सब एक गोल घेरे में गाते और नाचना शुरू करते हैं।

अर्थात् जब फसल पककर कटाई के लिए तैयार हो जाती है तो किसान अपने खेतों का संतोषजनक निरीक्षण करता है। वह अपने सबसे सुंदर कपड़े पहनकर धमाल नृत्य करके अपनी खुशी का प्रदर्शन करता है। यही उसके आंतरिक सौंदर्य का प्रतीक है[6]।

धमाल नृत्य हरियाणा का पारंपरिक नृत्य है। कहा जाता है कि यह महाभारत काल से चला आ रहा है। हरियाणा में होली का विशेष महत्व होता है। माघ शुक्ल पूर्णिमा को पंडित गांव के बाहर कालेर में डंडा गाड़ देता है। एक महीने तक गांव वाले इस डंडे के चारों ओर लकड़ियाँ इकट्ठा करते रहते हैं। इसके आसपास होली गाई जाती है और डफ बजाकर नृत्य किया जाता है। इसकी शुरुआत पुरुषों द्वारा हाथों में डफ पकड़कर गणेश वंदना के साथ की जाती है। यही इस नृत्य का आध्यात्मिक भाव और आंतरिक सौंदर्य है[7]।

इस नृत्य का बाहरी सौंदर्य यही है कि नाचते समय पुरुष नर्तक स्त्रियों की तरह पैर ऊपर की ओर उछालकर कूल्हे हिलाते हैं। यह उनकी लहलहाती फसल का प्रतीक है। नृत्य शुरू होने से पहले बड़ा नगाड़ा जोर–जोर से बजाया जाता है, जिससे सबको बुलाया जा सके। इसका संबंध महाभारत की लड़ाई से भी बताया जा सकता है, जैसे युद्ध शुरू होने से पहले नगाड़ा बजाया जाता था। यह आवाज सुनते ही गाँव वाले नाचने के लिए विवश हो जाते हैं। इस नृत्य में वीर रस की प्रधानता रहती है, लेकिन फिर भी हरियाणा के पुरुष इसे स्त्रियों की तरह नाचते हैं। उनका पैर उठाना, कूल्हे हिलाना, हाथों में पकड़ी डफ, कभी छड़ी को लचक के साथ हिलानाकृये सब मिलकर इसे पुरुष नृत्य होते हुए भी स्त्री नृत्य के करीब ले आता है। यही सौंदर्य लगभग हरियाणा के सभी लोक–नृत्यों में देखने को मिलता है[8]।

पूरे दिन की कड़ी मेहनत और अन्य काम–धंधों से फुर्सत पाकर, गाँव की युवा मंडली गाँव के बाहर खुले मैदान में इकट्ठा होकर ताल के साथ गीत गाना शुरू कर देती है। जैसे ही ताल 'सम' पर आती है, डफ पर पूरी ताकत से थाप पड़ती है, तो धरती और आकाश गूंज उठते हैं। धमाल के साथ गाए जाने वाले एक गीत का उदाहरण इस प्रकार है

---

[6] "When the crop is ripe for harvesting the farmer Surveys the fields with satisfaction. He dresses in his finery and expresses his joy in a dance called, Dhamal". लोक संपर्क विभाग हरियाणा, एक पैम्फलेट, हरियाणा मई 1989

[7] डा. नीरा शर्मा, भारतीय लोकनृत्यों में हरियाणा और राजस्थान, पृष्ठ 74.

[8] डा. नीरा शर्मा, भारतीय लोकनृत्यों में हरियाणा और राजस्थान, पृष्ठ 74.

डफ मधुरो बजावे, छोरा लीलगर का, डफ मधुरो।
ऐसा बजावे जल जमुना सुनीजै,
जमुना का नीर मधुर हो जाए
डफ मधुरो बजावे।

ताल का 'सम' पड़ते ही गीत की लय तेज हो जाती है। नर्तक मस्ती में चूर हो जाते हैं और उनके अंग–प्रत्यंग की गति भी तीव्र हो जाती है, जो उन्हें नए रस का अनुभव कराती है, और यह रस भक्ति–रस से कम आनंद नहीं देता। इस प्रकार यह नृत्य घंटों तक लगातार चलता रहता है। इस नृत्य में डफ को भी दुल्हन की तरह सजाया–संवारा जाता है, जो बाहरी सौंदर्य को दर्शाता है[9]।

इस नृत्य में सौंदर्य पक्ष इसके गीत हैं, जो आंतरिक सौंदर्य के धारक हैं। इन गीतों में किसानों की मनोकामनाएँ, उमंगें, मेहनत, बदले की भावना और सुख–दुःख के अनुभवों का उल्लेख मिलता है। इसके अतिरिक्त इनमें ऋतुओं के परिवर्तन, लहराते सुनहरे खेत, नए विवाहित जोड़े की नोक–झोंक, मिलन और विरह के पल भी आते हैं, जिनका उनकी रोजमर्रा की जिंदगी से गहरा संबंध है।

धमाल हरियाणा के पुरुषों का शुद्ध लोकगीत है, क्योंकि इसमें पेशेवर गायक नहीं बल्कि आम जन ही होते हैं। धमाल भारतीय गीत परंपरा का प्रसिद्ध राग है। इसे डफ पर गाया जाता है। हरियाणा के वीर इसे बड़े उत्साह से गाते हैं। इसके विषय इतिहास, पुराण, शृं•ार और घरेलू वातावरण के रंग हैं, जैसेकृ

'लक्ष्मण के रहे बाण लगा रहे शक्ति लक्ष्मण के।
ऐसा रहे होए कोई वीर न जिवाले,
आधा गज सिवाई धरती। लक्ष्मण...
कैं तो जिवाले सीता रहे सतवंती।'

क्या तो जगाए हनुमान जती। लक्ष्मण
क्या तुमने जगाई सीता सतवंती,
क्या तुमने जगाए हनुमान जती, लक्ष्मण
सच में जगाई सीता सतवंती,
औषधि (बूटी) से जगाए हनुमान जती। लक्ष्मण

यह एक ऐतिहासिक प्रसंग है। पर कई बार धमाला में शृं•ारिक पक्ष भी प्रस्तुत किया जाता है, जो सौंदर्य की अद्भुत अनुभूति कराता है, जैसे

[9] डा. रीता धनकर, हरियाणा तथा पंजाब की संगीत परंपरा, पृष्ठ–300.

तेरी चुनरी पर जुल्म कढ़ाई (कसीदा)।
किस महीने बोलता मोर–पपीहा।
कस्बे का शीशा चमकता है! तेरी चुनरी
सावन महीने बोलता है मोर–पपीहा,
फागुन में शीशा चमकता है! तेरी चुनरी

कौन–सी ननद ने काढ़ा यह कसीदा,
कौन–सी ने सजाया शीशा, तेरी चुनरी
छोटी ननद ने काढ़ा वह कसीदा,
बड़ी ने सजाया शीशा। तेरी चुनरी

इस गाने में उनकी चुनरी (दुपट्टे) पर काढ़े गए मोर, पपीहे और शीशों का जिक्र किया गया है, जो श्रृंगारिक सौंदर्य का प्रतीक है।[10]

इस नृत्य में सारंगी, बीन, बांसुरी, ढोलक, खड़ताल और चिमटा आदि वाद्ययंत्रों का प्रयोग अलौकिक रस उत्पन्न करता है। यह देखने वाले को नृत्य करने के लिए मजबूर कर देता है और उसे एक अलग ही दुनिया में ले जाता है। यह आंतरिक सौंदर्य का प्रतीक है, क्योंकि यह नृत्य करने वाले और दर्शक दोनों को आनंद की एक ही डोर में पिरो देता है। सरलता इस नृत्य का सौंदर्य है। किसान इसे अपनी खुशी के लिए करते हैं और अपनी दैनिक पोशाक में ही इस नृत्य को प्रस्तुत करते हैं। धोती, कुर्ता, सिर पर पगड़ी और कमर पर पटका बांधकर वे इस नृत्य में झूमते–गाते रहते ह[11]।

गुग्गा नाच

गुग्गा नाच एक आध्यात्मिक नृत्य होने के कारण आंतरिक भावनाओं को उजागर करता है। भादों के महीने में हरियाणा के पुरुषों द्वारा यह नृत्य गुग्गा पीर की याद में किया जाता है। राजस्थान में एक वीर योद्धा हुए हैं जिन्हें पीर, जाहिर पीर, गुग्गा पीर आदि अलग–अलग नामों से याद किया जाता है। बीकानेर के दरहेड़ा नामक गाँव में गुग्गा ने भू–समाधि ली थी। इन्हें साँपों का देवता भी माना जाता है। गुग्गा पीर की छड़ी को पंखों से सजाकर घर–घर घुमाया जाता है और इसके आसपास डेरू की ताल पर भक्त नाचते रहते हैं। आनंद और भक्ति रस में डूबे हुए ये भक्त गुग्गा पीर की याद में रोते हुए अपने शरीर पर लोहे की जंजीरों से वार करते हैं और अपना शरीर लहूलुहान कर लेते हैं। यह आंतरिक सौंदर्य की चरम सीमा है कि उन्हें अपने दर्द का अहसास तक नहीं रहता[12]। इस नृत्य की

10 डॉ. गुणपाल सांगवान, हरियाणवी लोक गीतों का सांस्कृतिक अध्ययन, पृष्ठ 219
11 डॉ. रीता धनखड़, हरियाणा तथा पंजाब की संगीत परंपरा, पृष्ठ 301
12 डॉ. नीर शर्मा, भारतीय लोकनृत्यों में हरियाणा और राजस्थान, पृष्ठ 70

सुंदरता यह है कि नृत्य करते समय प्रत्येक के हाथ में अपना एक वाद्य होता है, जिसे बजाते हुए भक्त जुलूस की शक्ल में घर–घर जाकर नृत्य करते हैं। इस विषय पर श्री डी. सी. वर्मा लिखते हैं

अर्थात गूग्गा नौमी से एक या दो हफ्ते पहले गूग्गा पीर के भक्त एक जुलूस निकालते हैं, जिसका नेतृत्व एक भक्त करता है, जो हाथ में गूग्गा की छड़ी लिए आगे चलता है। यह छड़ी एक लंबे और मजबूत बाँस का डंडा होता है, जिसे पंखों, फूलों और रंग–बिरंगे कपड़ों के टुकड़ों से सजाया जाता है। पाँच भक्त (पाँच वीर) मुख्य नर्तक होते हैं, जिनके पास अपने–अपने वाद्य होते हैं, जैसे ढोलक, मंजीरे, डेरू, चिमटा और झाँझ।[13]

यह नृत्य पूरी तरह आध्यात्मिक सौंदर्य में डूबा हुआ नृत्य है। इसकी विशेष बात यह है कि हिन्दू और मुसलमान दोनों धर्मों में ही गुग्गा की भक्ति की जाती है और नृत्य किया जाता है। इस दिन घरों में गुग्गा की पूजा के लिए उसकी दीवार पर तस्वीर बनाई जाती है और पीछे साँप बनाए जाते हैं। इसे पताशे, गुलगुले, खीर, चावल, सेवइयाँ आदि का भोग लगाया जाता है और शाम को पूजा की जाती है। गुग्गा की जगह पर मेले लगते हैं, जो एकता की मिसाल हैं। डॉ. शंकर लाल यादव के अनुसार, दुष्टों का नाश करने के कारण गुग्गा को पीरी (पीरत्व) प्राप्त हुआ। 'पीर' शब्द अवतार के अर्थ में प्रयोग हुआ है। डॉ. शंकर लाल यादव के अनुसार, दुष्टों का संहार करने के लिए गुग्गा को पीरी प्राप्त हुई। 'पीर' शब्द अवतार के अर्थ में प्रयोग किया गया है।[14]

'श्री टेंपल ने गुग्गा को एक हिंदू चौहान राजपूत और महमूद गजनवी के विरुद्ध लड़ने वाला पीर योद्धा बताया है।[15]

हरियाणा में अनेक स्थानों पर गुग्गा की मढ़ी होना और वहाँ मेलों का लगना, लोगों के गुग्गा की भक्ति में विश्वास ही इस नृत्य का सौंदर्य पक्ष है, क्योंकि आंतरिक सौंदर्य मेलों के रूप में नृत्य के द्वारा प्रकट होता है। संगीत ही आंतरिक सौंदर्य का प्रतीक है। हरियाणा जिले में गुग्गा पीर के अनेक गीत गाए जाते हैं। इनमें गुग्गा पीर की स्तुति और वीरता के गीत गाए जाते हैं। कहा जाता है कि भू–समाधि के बाद भी गुग्गा अपनी पत्नी से मिलने

[13] About a week or two before Gugga Naumi his devotees take out a procession let by a bhagat carrying 'Gugga Ki Charri' & a strong and long bambo stick decorated with fans] garlands and coloured pieces of clothes- Five Bhagats ¼Panch Vir½ are the main dancers- They carry their own musical instruments in their hands consisting of Dholak] Manjira] Derus] Chimta and Cymbols-ß ਸ਼੍ਰੀ ਡੀ-ਸੀ-ਵਰਮਾ] ਹਰਿਆਣਾ] ਪੰਨਾ 100-

[14] हरियाणा प्रदेश का लोक साहित्य (1960) पृष्ठ 295

[15] डा. भीम सिंह, हरियाणा के लोक गीत (1988) पृष्ठ 44

आते थे, पर अब वे केवल गुग्गा नौमी के दिन ही अपने भक्तों को दर्शन देते हैं। इस गीत के बोलों में यही दर्शाया गया है

लीला सा घोड़ा, गोरा सा गबरू,
धरती में गया री समा गया।
आ राणा, एक बर घर आ।
धरती माता मांगती है हिन्दू और मुसलमान। आ राणा॥
आज तक मेरा हिन्दू जन्म था, आज हुआ मुसलमान। आ राणा॥
परसों मेरा बाबुल जिरवैं, कहाँ गया बैठने वाला। आ राणा॥
तू मत जिरवैं बाबुल मेरा, मैं आऊँगा बैठने वाला। आ राणा॥
रसोई में तेरी माता जिरवैं, कहाँ गया जीने वाला। आ राणा॥
तू मत जिरवैं मायड़ मेरी, मैं आऊँगा जीमने वाला। आ राणा॥
सातवें दिन न आऊँ, आठवें दिन न आऊँ, आऊँगा नौमी की रात। आ राणा॥[16]

समाधि लेने के बाद भी गुग्गा पीर अपने भक्तों को दर्शन देते रहे। उन भक्तों की भक्ति–रस की अनुभूति ही आंतरिक सौंदर्य की धारणी है।

इस नृत्य में अपने गीतों और नृत्य में रोना और जंजीरें मारने से तो वे आध्यात्मिक सौंदर्य रचते ही हैं, बल्कि उनका पहनावा जैसे भगवा कुरता, लुंगी या धोती, भगवा साफा और गले में रुद्राक्ष की माला भी इस नृत्य में आध्यात्मिक सौंदर्य की सृष्टि में सहायक होते हैं।[17]

बीन बांसुरी नृत्य

हर वह नृत्य जो आपको खुशी देता है, वह आंतरिक सौंदर्य का धारक होता है। इसी प्रकार बीन बांसुरी नृत्य के लिए किसी अवसर की प्रतीक्षा नहीं की जाती, बल्कि मन की प्रसन्नता के लिए इसे कभी भी किया जा सकता है।

बीन एक ऐसा वाद्य है जो हरियाणा में बहुत ही प्रिय और प्रचलित है। इस पर लोक–धुनें बजाई जाती हैं और इसे सपेरे समुदाय द्वारा नृत्य करने के लिए उपयोग किया जाता है। चूंकि सर्पों को भगवान शिव से जोड़ा जाता है, इसलिए यह नृत्य आध्यात्मिक सौंदर्य का धारक भी हैकृकि किस प्रकार एक ऐसा जीव जो विषैला है, जिसके डसने से मनुष्य की

16 डॉ. रेखा शर्मा, हरियाणा के लोकगीतों में भक्ति भावना, पृष्ठ 257.
17 डॉ. नीरा शर्मा, भारतीय लोकनृत्यों में हरियाणा और राजस्थान, पृष्ठ 70

मृत्यु तक हो सकती है, उसे भी प्रेमपूर्वक पूजा जाता है, उसके साथ खेला और नाचा जाता है।

साँपों को नचाने के लिए बीन पर धुन बजाई जाती है और उन्हें पकड़ा जाता है। हरियाणा के टीटाना गाँव में सपेरों की बड़ी बस्ती है, जिनका मुख्य व्यवसाय साँप पकड़ना है। ये लोग विवाह–शादियों में भी बीन बजाकर नृत्य करते हैं।[18]

इस नृत्य में गाना नहीं होता, केवल गीतों की धुन ही बजाई जाती है। दर्शक अपनी पहचानी हुई धुन का आनंद लेते हैं। घुँघरुओं की झंकार और घड़ुए (मिट्टी का घड़ा) की ताल इसकी मिठास को बढ़ा देती है। बाँगर के इलाके में इसका ज़्यादातर प्रचलन है। गीत की तर्ज इस प्रकार होती है

'सपेरे बीन बजा रे,
चलूँगी तेरे साथ।'
'महिला के रहने वाली रे,
तुझे झोपड़ी उदास लगती है।
मैं झोपड़ी में गुजारा करूँगी रे,
तेरे साथ चलूँगी।'[19]

'इसके साथ तुंबा, खंजरी और ढोलक का प्रयोग किया जाता है। श्री नरेंद्र धीर तो दर्शक और कलाकारों की मनोस्थिति को संतुलित तार में जोड़कर रखने का अधिकतर हिस्सा वाद्ययंत्रों को ही देते हैं। उनके अनुसार दर्शकों के दिलों की धड़कन और अंग–प्रत्यंग भी वादन–तालों के साथ नाचने लगते हैं।'[20]

विभिन्न वाद्ययंत्रों का प्रयोग बाहरी सौंदर्य है, लेकिन उनकी अलग–अलग धुनों का एक सुर होकर दर्शकों और प्रस्तोता की मानसिक स्थिति को भी एक करना आंतरिक सौंदर्य है। भाव–वीणा या पूंगी हरियाणा के प्रसिद्ध लोक वाद्ययंत्रों में से एक है। सपेरे डफली और बीन की धुन पर नाचते हैं।[21] आजकल हरियाणा में यह लोक–नृत्य और भी प्रचलित होता जा रहा है। दूसरे रूप में, रंगमंच पर सौंदर्य के लिए दर्शकों को आकर्षित करने हेतु 'नागिन नृत्य' प्रस्तुत किया जाता है। सपेरा बीन बजाते हुए लड़की के चारों ओर घूमता है और लड़की नागिन की तरह लहराती हुई नृत्य करती है। बीन पर पारंपरिक लोक धुनें

[18] डॉ. नीरा शर्मा, भारतीय लोकनृत्यों में हरियाणा और राजस्थान, पृष्ठ 68

[19] रीता धनकड़, हरियाणा का लोक संगीत, पृष्ठ 102

[20] सप्त सिंधु पत्रिका, हरियाणा साहित्य विशेषांक, अक्टूबर, नवम्बर, 1968, पृष्ठ 34

[21] 'Bean or Pungi is one of the commonly used folk instruments in Haryana] Speras or the snake charms perform dances on the musical score provided by Tumba/ ¼a monochord½ Daphli and Bean-" 'हरियाणा का लोक नृत्य, जनसंपर्क विभाग द्वारा एक पैम्फलेट।'

बजाई जाती हैं और सपेरा भी उन पर झूमता हुआ नाचता है। शादियों में औरतों का रूप धारण कर पुरुषों द्वारा यह नृत्य प्रस्तुत किया जाता है। ये सपेरे जगह–जगह घूमते हैं और नाचकर अपनी रोजी–रोटी कमाते हैं। इस नृत्य का सौंदर्य इसके सादेपन और आवश्यकता में है। जब नाचने पर प्रसन्न होकर दर्शकों की ओर से कोई भेंट मिलती है तो खुशी में शरीर की लचक और भी बढ़ती जाती है। यह बाहरी सौंदर्य के कारण उत्पन्न हुआ आंतरिक सौंदर्य है।[22]

गूंगा धमौड़ा नृत्य

गूंगा धमौड़ा एक ऐसा नृत्य है जो विवाह–शादियों के शुभ अवसर पर बारात के समय किया जाता है और जब बारात डोली लेकर गाँव में आती है तब किया जाता है। पहले विवाह के समय बाजे की धुन पर असली घोड़ियों को नचाया जाता था, लेकिन बाद में बाँस की खपचियों से घोड़ी का खोल तैयार किया जाने लगा। इसे अंदर से खोखला रखा जाता था, जिसमें नर्तक अंदर घुसकर बाजे की ताल पर घोड़ी को नचाता था और यही परंपरा आज तक चल रही है। इस नृत्य का सौंदर्य इस बात में है कि नकली घोड़ी को इस प्रकार नचाया जाता है कि वह असली प्रतीत होने लगती है।

असल में गूंगा धमौड़ा नृत्य घुड़चढ़ी के अवसर पर घोड़ी के आगे–आगे नाचा जाता था, पर अब इसका चलन लगभग समाप्त हो गया है। डॉ. पूरणचंद्र शर्मा लिखते हैंकृ 'हरियाणा की घोड़ी बाजा मंडलियों में पाँच–छ¬ह वाद्य बजाने वालों के अतिरिक्त दो नर्तक होते हैं, जो अपने नृत्य से दर्शकों को आकर्षित करते हैं। इनमें एक नायक और दूसरा नायिका का अभिनय करता है। नायक नकली घोड़ी नचाता है। यह बहुत हल्की होती है, जिसके बीच में इतनी जगह खाली छोड़ दी जाती है कि घुड़सवार कहलाने वाले नर्तक का शरीर इसमें से ऊपर निकल सके। नर्तक के पैरों में घुँघरू बँधे होते हैं, जो घोड़ी की टाँगों का काम करते हैं। घोड़ी की लगाम पकड़कर नर्तक इस तरह नाचता है कि मानो वह सचमुच की घोड़ी को नचा रहा हो।[23']

इसका सौंदर्य इसमें है कि इसका रंगमंच चलता–फिरता रहता है। नर्तक घोड़ी को नचाते हुए एक स्थान से दूसरे स्थान पर घूमते रहते हैं। वे किसी एक निश्चित स्थान पर नहीं रुकते। कहा जाता है कि वादक देखने वालों और प्रस्तुति देने वालों की मनःस्थिति को एकजुट करके जोड़कर रखने का काम करते हैं। गूंगा धमौड़ा नृत्य में ढोल, नगाड़ा और

[22] डा. नीरा शर्मा, भारतीय लोकनृत्यों में हरियाणा और राजस्थान, पृष्ठ 68
[23] डा. पूर्ण चन्द्र शर्मा, लोक संस्कृति के क्षितिज, पृष्ठ 34

वाद्य आदि का प्रयोग किया जाता है। इसमें गीत नहीं होते। हारमोनियम और बीन पर धुन बजाई जाती है।

पहनावा बाहरी सौंदर्य का प्रतीक माना जाता है कृ जो वस्तु आंखों को अच्छी लगे, वही मन को भी भाती है। इनका पहनावा इतना चटकीला होता है कि देखने वाला आकर्षित हो जाता है। कमीज, धोती, सिर पर साफा और पैरों में घुंघरू बांधे जाते हैं।[24]

संदर्भ और टिप्पणियाँ

1 डॉ. सत्य मल्होत्रा, नई कविता में सौंदर्य चेतना, नेशनल पब्लिकेशन्स हाउस, नई दिल्ली, 2001.

2 When the crop is ripe for harvesting the farmer Surveys the fields with satisfaction. He dresses in his finery and expresses his joy in a dance called, Dhamal.'' हरियाणा, एक पैम्फलेट, लोक संपर्क विभाग हरियाणा, मई 1989

3 डॉ. रीता धनकड़, हरियाणा तथा पंजाब की संगीत परंपरा, संजय प्रकाशन, दिल्ली 2003

4 डॉ. गुणपाल सांगवान, हरियाणवी लोकगीतों का सांस्कृतिक अध्ययन, हरियाणा साहित्य अकादमी, चंडीगढ़ 1989

5 डॉ. नीरा शर्मा, भारतीय लोकनृत्यों में हरियाणा और राजस्थान, सत्यं पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली 2005

6 ÞAbout a week or two before Gugga Naumi his devotees take out a procession let by a bhagat carrying 'Gugga Ki Charri' & a strong and long bambo stick decorated with fans] garlands and coloured pieces of clothes- Five Bhagats ¼Panch Vir½ are the main dancers- They carry their own musical instruments in their hands consisting of Dholak] Manjira] Derus] Chimta and Cymbols-** 'श्री डी.सी. वर्मा, हरियाणा, हरियाणा साहित्य अकादमी, चंडीगढ़, 1991'

7 हरियाणा प्रदेश का लोक साहित्य (1960) हिन्दुस्तानी अकादमी इलाहाबाद 1991

8 डा. भीम सिंह, हरियाणा के लोक गीत (1988) आर्य बुक डिपो, दिल्ली,

9 डॉ. रेखा शर्मा, हरियाणा के लोक–गीतों में भक्ति भावना, हरियाणा साहित्य अकादमी, पंचकुला, 2005

10 सप्त सिंधु पत्रिका, हरियाणा साहित्य विशेषांक, अक्टूबर, नवम्बर, 1968

11 ÞBean or Pungi is one of the commonly used folk instruments in Haryana] Speras or the snake charms perform dances on the musical score provided by Tumba/ ¼a monochord½ Daphli and Bean-'हरियाणा का लोक नृत्य, जनसंपर्क विभाग द्वारा एक पैम्फलेट।'

12 डॉ. पूर्ण चंद्र शर्मा, लोक संस्कृति के क्षितिज, संजय प्रकाशन, दिल्ली।

[24] डा. नीरा शर्मा, भारतीय लोकनृत्यों में हरियाणा और राजस्थान, पृष्ठ 68.